मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १२८ • दिसम्बर-२०१७

जन्मस्थान उद्घाटन महोत्सव –
छपैयाधाम का दर्शन दि. ४, नवम्बर २०१७

सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का प्राकट्य स्थान – छपैया धाम (यु.पी.)

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

जन्मस्थान उद्घाटन महोत्सव – छपैयाधाम का दर्शन दि. ४, नवम्बर २०१७

જન્મસ્થાન-ઉદ્ઘાટન-મહોત્સવ---છપિયાધામના-દર્શન-તા.-૪-નવેમ્બર,૨૦૧૭

જન્મસ્થાન ઉદ્‌ઘાટન મહોત્સવ -- છપિયાધામના દર્શન તા. ૪ નવેમ્બર ૨૦૧૭

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १२८

दिसम्बर-२०१७

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०६
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	सर्वोपरी छपैयधाम में श्रीहरि के तीनो स्वरुप' के मुख से अमृत वचन	०८
०४.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०५.	सत्संग बालवाटिका	१२
०६.	भक्ति सुधा	१७
०७.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

सर्वावतारी सर्वोपरि ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने उत्सवो की ऐसी परंपरा प्रस्थापित की है की हमारे संप्रदाय में सतत उत्सव चलते रहते हैं। श्रीहरिने हरिभक्तों को आर्थिक रुप से बहुत सुखी कीया है इसलीये सभी लोग बड़े उत्साह और प्रेम से सेवा करते हैं। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और समग्र धर्मकुल की निश्रा में और सेंकडो संत-हरिभक्तो की उपस्थिति में हमारे मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा, पाटोत्सव, पारायण, शाकोत्सव इत्यादि बड़े हर्षोल्लास से मनाये जाते हैं। जीसने भी एसे उत्सव में सेवा की है या तो दिव्य दर्शन का लाभ लिया है और अपने जीवन के अंतिम समय पर एसे किसी उत्सव समैया के दर्शन उसे याद आते हैं तो उसका भला होता है। और विशेष एसे अलौकिक वचनामृत के द्वारा भी सत्संगी और भगवान के भक्त के गुण हमारे जीवन में आते हैं।

''इसलीये जो भगवान का भक्त है उसे सभी सत्संगी का गुण ही लेना है और अपना तो अवगुण ही लेना है। एसी जीव की समज है और बुद्धि कम है तो भी उसका सत्संग प्रतिदिन बढता जाता है और उसकी समज नहीं है लेकीन बड़ा बुद्धिवान है तो भी धीरे धीरे वह सत्संग से दूर होता जाता है और अंत में निश्चय ही वो विमुख हो जाता है। और एसी रीत तो सभी जगह पर है। जो नोकर या शिष्य है उसे अगर राजा या अपने गुरुने डाँट दीया, तो अगर वह नोकर या शिष्य उसे सही तरीके से लेता है तो वह अपने राजा या गुरु का स्नेह और विश्वास अर्जीत करता है लेकिन अगर वह उसी डाँट को किसी दूसरी तरीके से लेता है तो उसे स्नेह और विश्वास प्राप्त नहीं होता। भगवान की भी एसी ही रीत है।'' (व.ग.म. २६)

इस लीये हमे इस वचनामृत को कंठस्थ करके अपने जीवन में उतारना है जिसके द्वारा हम अपने ध्येय और मोक्ष का मार्ग सुनिश्चित कर ले वही हमारे लीये श्रेष्ठ है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

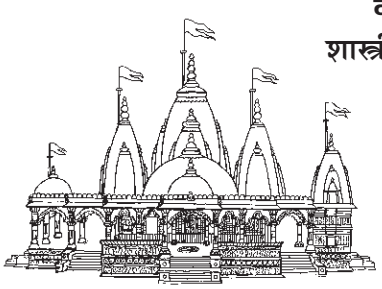

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा (नवम्बर-२०१७)

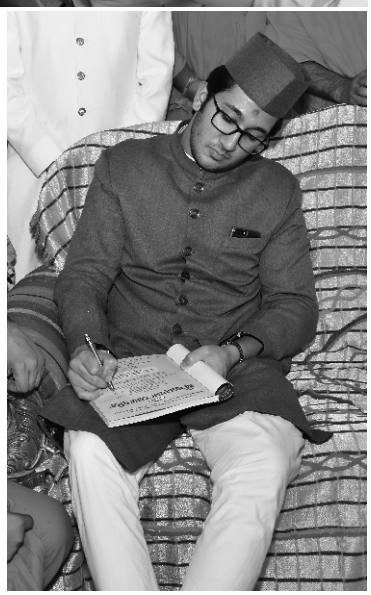

३ से ५	सर्वोपरी छपैयाधाम श्री जन्म स्थान मंदिर के उद्घाटन महोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
७	श्री स्वामिनारायण मंदिर वणझर के पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
८	श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर के पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
१०	श्री स्वामिनारायण मंदिर कडी के पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
११ से १६	लंदन श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडनलेन और हेरो मंदिर में पदार्पण।
१९	श्री स्वामिनारायण मंदिर धमाणसा में नूतन सिंहासन मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण।
२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर गोविंदपुरा (वेडा) में नूतन सिंहासन मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण।
२१	पेथापुर गाँव में पदार्पण और वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर काली गाँव के पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
२२	सिमेज (धोलका देश) गाँव में कथा पारायण के अवसर पर पदार्पण।
२३	श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) के पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा में कथा पारायण के अवसर पर पदार्पण।
२७	श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी शिखरबध्धमहामंदिर की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०१७)

१ से ५	सर्वोपरी छपैयाधाम श्री जन्म स्थान मंदिर के उद्घाटन महोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
१६	श्री स्वामिनारायण मंदिर धमाणसा में नूतन सिंहासन मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण।
२५	श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर के पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण।
२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी शिखरबध्धमहामंदिर की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण।
२९	श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (पाटीदार) के पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण

सर्वोपरी छपैयधाम में श्रीहरि के तीनो स्वरुप' के मुख से अमृत वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

जन्मस्थान उद्घाटन महोत्सव के अवसर पर - प.पू. लालजी महाराजश्री : नूतन वर्ष की शुरुआत में लोग अपने स्वजन से मिलने जाते हैं। और हमारा यह सत्संग परिवार नये वर्ष की शुरुआत में इतनी बडी संख्य में यह एक ही जगह पर उपस्थित है और वह भी घनश्याम महाराज के सानिध्य में जो इनके लीये एक स्मृति बना रहेगा। हमारा यह मंदिर हम सभी का मंदिर है इस में किसीने १० रुपये दिये है या १० लाख रुपिये दिये है उसका को महत्व नही है लेकिन उनकी जो भावना है उसका महत्व है। भाव से दीये हुये १० रुपये भी १० लाख रुपये के समान है। हम सत्संग और दूसरो को कराये जीससे महाराज विशेष प्रसन्न होते हैं। और उसके लीये विशेष हमारे भावी पीढी में संस्कार बने रहे और मूल संप्रदाय के सिध्धांत भी सुरक्षित रहे उसके लीये हमारे मंदिरो में बाल मंडल की प्रवृत्ति चलती है। जिस में बच्चो को संमीलीत होने के लीये प्रोत्साहित करे। उत्सव साथ देने वाले सभी हरिभक्त को बहुत धन्यवाद और विशेष रुप से उन सभी स्वयं सेवको को भी विशेष धन्यवाद जिन्होने जिन में से बहुत लोग को दिपावली के पर्व के पहले यहा आकर सेवा कर रहे हैं और अपना व्यवसाय - परिवार छोडकर दिपावली का त्यौहार भी यही पर मनाया है।

प.पू. मोटा महाराजश्री : परोक्ष के एक भक्त का नाम के साथ उदाहरण देते हुए प.पू. मोटा महाराजश्रीने कहा की एक भक्तने गोकुल मथुरा में श्रीकृष्ण भगवान के पास एक ऐसा वरदान मांगा की, ''मेरा दूसरा जन्म गोकुल-मथुरा की भूमिमे कीसी वृक्ष वेली या पंछी के स्वरुप में हो जीससे इस भूमि और यहा पर आने वाले भक्तजनो की चरणरज मुज पर गीरे।'' अपनी बात करे तो इस उत्सव में जो भी आये है उनको दूसरा जन्म नही लेना है सिवा सर्वोपरि महाराज को नही पहचाना है जैसा वचनामृत में कहा गया है और स्वरुप निष्ठा में त्रूटी होगी और नरनारायणदेव को महाराज से भीन्न या तो न्यून जानते है तो इस समज की त्रूटी को दूर करने के लीये दूसरा जन्म लेना पडेगा ऐसा हमारा मन्तव्य है। अयोध्याप्रसादजी महाराज और हमारे पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज को भी यह छपैया बहुत प्यारा था। हमारे जन्म के समय वे यहा पर एक मास तक रुके है। सत्संगी मात्र को साल में कम से कम एक बार तो छपैया दर्शन के लीये अवश्य आना चाहीये एसे अनुरोधके साथ सभी को बहुत बहुत धन्यवाद।

दि. ३-११-१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिर को देखकर साथी संतो पर अंतर से इतने प्रसन्न हुए थे की स्टेज पर खडे होकर ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी (महंतश्री छपैया), शा.स्वा. श्री आत्मप्रकाशदासजी (महंतश्री जेतलपुर) और शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर), पुराणी स्वामी धर्मनंदनदासजी (महंतश्री भुज) और शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंतश्री अहमदाबाद) इन सभी संतो को भेट कर और पुष्पमाला पहनाकर उन सभी का अभिवादन किया और पार्षदवर्य श्री जादवजी भगत (कोठारीश्री भुज) को पुष्पमाला पहनाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी।

दि. ४-११-१७ : माननीय संत एवम् प्रिय हरिभक्त - जय स्वामिनारायण ! यह उत्सव अनुभुति का अवसर है जिसका वर्णन मुख से हम नही कर सकते ! पहले दीन हम रसोई घर में गये और जो लोग वहाँ पर सेवा करती सारी सुविधाये उपलब्धकराते है उनके घर में चार लोग रसोई बनाते है। हमारी इन्स्टाग्राम में एक तस्वीर है। उनके घर के भीतर चार से भी ज्यादा तस्वीर होगी। जीस के पास विवेक है और भगवान है वही धनिष्ठ व्यक्ति है। वही धनवान है, वही संस्कार है और वही ईश्वर की कृपा है। आज स्वामीने हमारे लीये बहुत कहा लेकीन जीवन में कोई भी कार्य अकेले नही हो शकता। हम सभी देव के लिये यहाँ एकत्रीत हुये है। यह बहुत सटीक बात है जीस में कोई व्यक्तिगत स्वार्थ न हो, देव के लीये कार्य होता हो, भगवान को प्रसन्न करना कार्य होता हो तभी वह कार्य नही रुकेगा, अवश्य सफल होगा। हम को आप सभी का साथ है इस में कोई छोटा-बडा नही, बाह्य रुप से कोई छोटा-बडा हो सकता है!

हम भाग्यवान है की हम को यह भूमि मीली है, कल मोटा महाराजश्रीने कहा था की यह जन्म स्थान अहमदाबाद को प्राप्त हुआ है, हमे धर्मपुत्र मिले है क्यों की हमे भक्तिमाता मीले है और धर्मपुत्र की वजह से धर्मकुल मीला है, धर्मकुल की वजह से संत मीले है, संत मीले तो हरिभक्त मीले है और अगर यह सभी न मीलता तो हमे कुछ

न मीला होता और हमारा कुछ भी ठीकाना न होता । इस भूमि के तप से ही हम सभी सुखी है और इस भूमि की रज को हम अपने मस्तक पर लेते है । कीसी की ताकात नही की स्वामिनारायण का नाम लेता हो और इस भूमि का दर्शन न करे । यहाँ पर जो भी हरिभक्त एकठे हुए है वे बडे भाग्यशाली है । आप सब अपने घर, व्यवसाय सब को ताला लगाकर और समय नीकालकर यहा पर आये हो । यह कोई छोटी बात नहीं है । हमारे संत भी अपनी अनेकविधप्रवृतिया छोडकर बहुत दूर से यहाँ पर आये हुए है । लगता है कि यहा का रास्ता अभी ठीक कीया गया है । पहले इस रास्ते की बहुत शिकायते थी । जीस की भी एक स्मृति रहती थी ।

अभी यहाँ पर पुलीस को देखा तो एक बात याद आयी की जब व्यक्ति अपने गणवेश पहरनकर आता है तो लोग यह भूल जाते हैं की वह भी एक मनुष्य हैं । अहमदाबाद में कडी घूप में एक ट्राफीक पुलीसवाला ट्राफीक सर्कल के बीच अपनी फर्ज अदा कर रहा था । और कीतने घंटे की वह फर्ज होती है । और उनको त्यौहार के दिन छुट्टी भी नही मीलती । एक दिन एक द्रश्य देखा एक आदमी ने ट्राफीक पुलीस को ठंडे पानी बोटल दी आपने तीलक लगाया है हमने शिर पर पाघ पहनी है, संतो ने गेरुआ वस्त्रो पहेने हैं लेकीन यह नही भुलना चाहिए की हम सभी मनुष्य है ! मनुष्य से ही दुनिया चलती है । मानवता के बीना दुनिया नही चलती ।

दूसरी एक बात याद आ गयी, बीस दिन पहले श्रीराजा अपनी किसी सखी को मीलने जा रहे थे ड्रायवर को लेकर जा रहे थे लालजी महाराज साक्षी है गादीवालाने कोल कीया क्या कर रहे हो पहोंच गये ? श्रीराजाने उतर दिया सब्जी खरीद रहे हैं, सब्जी खरीद रहे हो ? सब्जी तो हमारे पास बहुत सारी है । हुवा युं की एक ६-७ साल की लडकी और उतने ही साल का एक लडका जहाँ पर श्रीराजा पर बैठे वह पर आये और अपने हाथ फेलाये श्रीराजाने अपने पास जो भी २०-३० रुपिये होंगे वो निकाल कर दीये तब उन्होने कहा, ''नही, हमे पैसे की जरुरत नही हमारे पास रोटी है लेकिन सब्जी नहीं ।'' जरा सोचिये हमको महाराजने कितना दीया है ! कल्पना कीजीये अगर सच में कभी ऐसा दिन आ गया कि हमे भी सब्जी मांगनी पडी हो । हकीकत में दूसरो की थाली में सब्जी कम न पड जाये इसका ध्यान हमें रखना है । हमने बार बार कहा है कि - महाराज के पास या तो ५०० परम हंसो के पास अन्न पानी नहीं थे इसीलीये महाराजने कूवे, वाव, अन्नक्षेत्र बनवाये एसा नहीं है वे तो भगवान थे छोटे से छोटा जीव भी सुखी हो इसीलीये महाराजने सब कीया था । यही हमारी नींव है और यह हम कभी न भूले, अभी हमारी पास जो भी सुख है उसके पीछे हमारे वयस्क पुर्वजोने दुःख सहन करके बड़ा ही परीश्रम कीया है । बीती हुई बात को हम नही मानते हैं लेकिन उसको भूलना भी हम नही मानते हैं आज हम सबको दिन में दो बार अपनी थाली में मैसुब, मगज या मोहनथाल इतना मिलता है की हमारी कोलेस्ट्रोल बढ जाये । यह हकीकत है हमारे अहमदाबाद देश कि बात करे तो महंत स्वामी और जादवजी भगत को यह पता होगा, और हमारे वयस्क संतोने भी यह सुना होगा की दिन के दो बार देव को थाल हो भी या न भी हो ! हमारे देश भारत का जब विभाजन हुआ उस समय हमारे पास बीजली के बील जितने भी पैसा नहीं था ।

धर्मकुल के पूर्वजो में सुवासिनी बा को हम याद करे, सभी का योगदान है । हम दिखाई दे रहे है परदे के पीछे उनका (प.पू. गादीवाला) भी योगदान और उनकी शक्ति है । सुवासिनी बा ने अपने चांदी के कडले मूली मंदिर के निर्माण के लीये दिये थे । अभी जब वहाँ पर पारायण हुई तब सब के दर्शन के लीये उसको बाहर नीकलवाये थे । अतित को हम बार बार याद न करे लेकीन उसको हम भूले भी नहीं । हमारे यह ईतिहास हमारी आने वाली पीढी को भी हम एसे ही कहे हम अतित को याद कर बार बार रोना नही चाहते लेकिन अतित में एसी परिस्थिति के बीच हमारे संप्रदाय के छपैया के भीतर उसकी शुरुआत हुई है, कल रात रोशनी और आरतशबाजी देखने का मजा आया । हम मंदिर में उपर आखरी मंजील तक गये क्युं भगवान के भक्तो का दर्शन ठीक तरह से गये इसलीये हम गये थे । भगवान के साथ भक्तों के भी दर्शन हम क्युं न करे बहुत लोग एसा कहते हैं की हम इस तीर्थ में जाये और दूसरे तीर्थ में न जाये तो हमें उसका पुरा फल नही मिलता । पता नहीं इसका संशोधन करना पडे । लेकीन तीर्थ के कुछ भी एसा नियम होते है जो कठीन होते हैं । हमारे लिये तो यही गया और काशी है, इसीलिये हम कही नहीं जाते हमको महाराजने जो दीया है उससे हम बहुत राजी है । बहुत लोग हमे कहते हैं की हमे यहा पर जाना है, वहाँ पर जाना है, तब हम कहते हैं कही नहीं जाना क्युंकी महाराजने हमे देव दिया है । देव का स्थान दिया है यह चीज ११०% जितनी सत्य है की जीतना देव के दर्शन का महिमा है उसी महिमा से अगर भगवान के भक्तों का दर्शन न करे तो मंदिर की सिड्डिया चढना भी व्यर्थ है और भक्तों में कपडे का कोई भेद नहीं है जिस में संत-हरिभक्त सभी आगये इसीलिये हमको भी अभिषेक के बाद भक्तों के साथ उनकी भीड में रहना अच्छा लगता है ।

श्री स्वामिनारायण

हरिभक्तोने सबकुछ छोडकर उनके हजारो लाखो करोडो रुपिया की दुनिया को छोडकर यहाँ पर आये हुये हैं । उनको क्या उपदेश दे ? आप सभी के मन में इस भूमि की महिमा है इसीलिये आप यहाँ पर आये हो इसीलिये आपको में उपदेश नही देता लेकीन हम सभी बड़े भाग्यवान है की यह भूमि नरनारायणदेव को मीली है और हम यहाँ ध्यान रखे की हम यह बात कभी न भूले । हमारे पास हम नरनारायणदेव के सीवा कभी नही निकालते । हमारे मस्तक के स्थान के सिवा कही और कभी नही झुकता और आगे भी कभी नही झुकेगा । हमको जो देव मिले है वो हमारे लिये सर्वोपरी है । कल मोटा महाराजने कहा की महाराज और नरनारायणदेव में भेद नहीं देखना यह देव बडे या छोटे दुबले या पतले यह सारा भेद हमारी आंखो में छुपा है । महाराजने उंबर पर खडे होकर यह कहा कि, "इस देव और हमारे बीच में कुछ भी तफावत नहीं है ।" तो फिर अगर हम इसमें तफावत देखे तो उसका यह तात्पर्य नीकलता है कि हम महाराजसे भी ज्यादा समजदार है या तो हम महाराज को गलत साबीत करने की कौशिश कर रहे हैं । महाराज ने हमारे नैव महा मंदिरो में जो भी देव की प्राण प्रतिष्ठा की उनमें को भी छोटा-बडा नहीं है क्योंकी वे भगवानने स्वयं प्रस्थापित किये हुये देव है । हम भाग्यवान है की हम को यह सब मिला है और हमे उसका गर्व रखना है ।

रसोई घर में और अन्य सेवा में झालावड से, चोवीसी प्रांत से, उत्तर गुजरात से, बापुनगर से एक मास पहले से ही हरिभक्त यहाँ पर आये हैं, संतो भी महेनत कर रहे हैं । यब सब बहुत कठीन है क्योकि इस प्रांत में कोई भी अकेला आकर सिफारीश या मंदिर को के समर्थन के बिना यहा प्रयत्न करके देखे पता चल जायेगा । एक भगत आये थे हमने कहा उनको चार दिन के लिये छुट्टी दे दो उनको भी पत्ता चले कि उत्तर प्रदेश में सरकार कैसे चलती है । हम निंदा नही कर रहे हैं । जहा जैसी रीत हो उसी रीत की तरह काम करना पडता है । इसीलिये गुजरात के संत-हरिभक्तोने यहा पर जो कार्य कीया है वह बहुत बड़ी बात है । भारत के नामांकित तेडुंलकर अगर मुंबई में शतक बनाये तो वह सहज लेकिन विदेश की भूमि पर वह शतक बनाये तो उसका विशेष गुणगान गाया जाता है । मैं गलत तारीफ में नही मानता लेकिन महेनत तो है ही । प्रत्येक संत अपनी खुद की एक रीत से यह सब काम करते हैं यहा कोई भी आराम से नही बैठा है । यह सांख्ययोगी महिलाओ के लीये भी आप अभिवादन किजीये श्रीराजा भी पडदे के पीछे बहुत काम करते हैं और हम महिलाओ के सत्संग को भूल नही शकते । यह घर भक्तिदेवी का है धर्मदेव का नहि इसीलिये स्त्री शक्तिका प्राधान्य तो है ही, अगर नहीं मानेगे तो घर जाकर मानना पडेगा !

महंत स्वामीने कहा की, आपने दीया हुआ कार्य पुरा हुआ है लेकिन हम सब का कार्य किसी भी दिन पुरा हो सके एसा है ही नहीं क्या कभी साधु किसी दिन निवृत होता है ? मोटा महाराजश्री निवृत होने के बाद भी म्युजियम में बैठते हैं ! हम सब सत्संग में एक दूसरे के साथ है और आखरी साँस तक साथ रहेंगे और साथ मिलकर धाममें जायेंगे । किसी ने कोई और योजना बनाकर रखी है तो बताइये । हम कही पर भी अलगाव रखना नही चाहते यह सारे संत वडताल, गढडा, उत्तर गुजरात, चोवीसी, कच्छ और वागड देश से आये लेकिन क्या वे अलग है अगर आप ऐसा करे तो मुझे कहना । वास्तव में कोई भेद नहीं हैं । सारे भेद हमारे दिमाग में से आते हैं । भगवान के लीये किसीने एक करोड की राशी न्यौछावर की हो, किसी ने सब्जी काटी हो या फिर किसी ने ट्राफीक का नियमन किया हो या फिर किसी महिलाने महाराज के लिये माला बनाई हो सभी का फल एक ही है ऐसा हम मानते हैं ।

इस सुंदर उत्सव में आप सभीने भाग लीया और अपना योगदान दिया बहुत धन्यवाद आज सुंदर पर्व है । भगवान का दर्शन करे यह हमारा परिवार है । इसमें सुख शांति है और हमारी यह उन्नति एवम् प्रगति भगवान की दिव्य शक्ति की वजह से हैं । देव के लिये और देव को आगे रखकर जो भी कार्यकर्ता है वो कभी भी पीछे नहीं रह जाता । हम सभी ब्रह्मचारी राम स्वामी को याद करे कीतना निस्वार्थ प्रेम और कीतना उत्कट भाव वे रखते थे । बिना भोजन करवा वो कभी नही जाने देते थे । यही हमारी परंपरा है । हमारा यह संप्रदाय लगाव और प्रेम से बंधा हुआ है रुपियो से नहीं । यह संतो का बडा अभिवादन कि उन्होंने यह परंपरा को संभाल के रखा है । हमे निंदा से नही डरना है । कोई निंदा करे तो अच्छा लगता है ! क्योंकि उससे हमारा कार्य और अच्छा होता है । जो कार्य करता है उसकी ही निंदा होती है, सात पीठी से दुश्मनावट हे तो भी क्या आपने सुना है कि किसीने स्मशान में जाकर कीसी को मृतदेह का अपमान कीया हो ! देव के काम हो रहा और सही दिशा में हो रहा हो तो किसी को अच्छा लगे या न लगे हमे कोई कुछ भी नहीं करता । हमें गर्व है कि आप सभी देव के लीये काम कर रहे हों । सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज आप सभी का बहुत मंगल करे, हम सब सारे उत्सव-त्यौहार पर मिलते रहे और देव की सेवा करते करते आनंद भी ले आप सभी के परिवार को महाराज की प्रसन्नता प्राप्त हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणारविंद में हमारी विनम्र प्रार्थना ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम का ७ वाँ वार्षिक स्थापना दिन

हमारे संप्रदाय में देवो का अभिषेक प.पू. आचार्य यमहाराजश्री के वरद् हस्त से किया जाता है। कुछ परिस्थिति में यह अभिषेक संतो के द्वारा भी किया जाता है। लेकिन हरिभक्तों को अपने हाथों से अभिषेक करने का अवसर हमारे संप्रदाय में केवल म्युजियम में ही प्राप्त होता है। और यह अभिषेक भी श्री नरनारायणदेव की चलित प्रतिमा का किया जाता है। जीसका लाभ हमारे हरिभक्त किसी ना किसी अवसर पर उठाते हैं।

दिनांक १८-०२-२०१८ रविवार फाल्गुन शुक्ल-३ (श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव) के शुभ दिन पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम का स्थापना दिन हमारे श्री स्वामिनारायण म्युजियममें दूपहर ३-०० से ६-०० बजे के बीच मनाया जायेगा।

इस अवसर पर धर्मकुल के सानिध्य में आयोजित श्री नरनारायणदेव का अभिषेक और महापूजा का लाभ लेना चाहते है ऐसे हरिभक्त अपना नाम श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत कराये ऐसा अनुरोधहै।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-नवम्बर-१७

रु। ४३,०००/-	प्रविण कुरजी केराई - केरा कच्छ
रु। ५,५००/-	कर्नल प्रकाशभाई और पृथ्वीराज और सहज एवम् विहान चौहाण परिवार - काचा टेवर्स - लेस्टर
रु। ५,०००/-	राठोड छगनलाल मूलजी - जीरागढ (अभी मुंबई)
रु। ५,०००/-	प्रेमचंदभाई पाटडीया - सायला (अभि अमेरिका)
रु। ५,०००/-	मिनाबेन के. जोषी - बोपल
रु। ५,०००/-	पुमनभाई मगनभाई पटेल - अहमदाबाद
रु। ५,०००/-	पटेल ज्योत्सनाबेन डाह्याभाई - वडुवाला चि. पुनमबेन जीज्ञेशभाई को केनेडा का विजा मिला उस अवसर पर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि नवम्बर-२०१७

दि. ०५-११-२०१७	प्रशांत कांतिभाई परमार - कालुपुर अहमदाबाद, ह. जयकिशन और रिध्धि
दि. १९-११-२०१७	(सुबह) कांतिभाई मोहनभाई पटेल - पादरा (वडोदरा)
	(दूपहर) भरतभाई लालजीभाई रंगाणी - सुरत
दि. २५-११-२०१७	अगस्त्य विरलभाई ठक्कर - यु.के. (जन्म दिन के अवसर पर)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग आलंपाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

हिंमतवाला को हरि मिले

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

बात पढने जैसी है, बात छोटी है लेकीन कुल मिलाके देखे तो बहुत बडी है। जीस में भक्तों को कसोटी है। एक बार एसा हुआ की भगवान स्वामिनारायण खोखरा से पूर्व दिशा के गाँव कणभा आये। कभी कभी भक्तों सावधानी रखनी पडती है। किसी भी परिस्थिति में जो व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन रख शके वही अच्छा काम कर सकता है। लेकिन कणभा के भक्तों ने एक गलती कर दी और बाद में बहुत पछताये।

जब महाराज कणभा आये तब सभी हरिभक्तोने महाराज का स्वागत कीया। महाराजने कहा, ''स्वागत की बात बाद में करे पहले आप जानते है हमारी क्या स्थिति है ? आप हमे रखना चाहे तो यहाँ पर रख सकते हैं। हम रहने के लिये तैयार है लेकिन हमारे पीछे हमे पकडने के लीये पेश्वा की सेना आ रही है। खोखरा में झगडा हुआ और हाथापाई भी हुई है और सेना हमारे पीछे लगी हुई है।'' यह बात सुनकर कणभा के हरिभक्तोने महाराज को कहा की अगर पूरी सेना गाँव पर हमला करती है तो फीर गाँव तो तहस-नहस हो जायेगा और पूरे गाँव को बड़ा ही नुकसान होगा इस लीये आप आगे की और चले।(भक्ति है लेकिन शौर्य नहीं है तो एसा ही होता है।) श्रीजी महाराज मुश्कूराते हुए नीकल गये और सोचने लगे की ये सभी हमारे भक्त होने के बावजुद अभी ठीक तरह से संत समागम से तैयार नहीं हुये है इसिलीये वे सब हम को रखने से डर गये।

महाराज कणभा से आगे चले गये। खारी नदी को पार करते हुए वहेलाल गाँव में जेसंगभाई के घर आये। उस समय घर पर उनकी बहन वखतबा थी और जेसंगभाई नहीं थे वो कही बाहर गये होंगे। वखतबाने महाराज का स्वागत किया। महाराजने कहा, ''स्वागत की बात बाद में करे पहले आप जानते है हमारी क्या स्थिति है ? आप हमे रखना चाहे तो यहाँ पर रख सकते हैं। हम रहने के लिये तैयार है लेकिन हमारे पीछे हमे पकडने के लीये पेश्वा की सेना आ रही है। आप के पास शक्ति है, आप हमे यहा रखे अन्यथा हम कही और जायेगे।''

ध्यान से पढे, शूरवीर भक्त कैसे होते है, जेसंगभाई की बहन कहती है ''महाराज किसी की सेना ? पेश्वा की ओहोहो..... एसी मखीया तो पीछे आती रहेगी इसमे क्या डरना ! महाराज ! मैने श्रीमद् भागवत गीता में सुना है की ''जहाँ भगवान है, वहीं विजय है''। ''अगर आप हमारे घरमे हो तब पुरी दुनिया की सारी सेना आ जाये तो मुजे कोई डर नहीं।'' महाराज घर की अंदर आये और अपनी माणकी घोडी को घर के अंदर बांधदीया। वैसे तो घोडी को घर के बाहर रखते हैं लेकिन जब कीसी शत्रु का आक्रमण हो रहा हो तब महाराज को छुपाने के लिये घोडी को अंदर बांधदीया। उस बहनने अपने घर में से सांबेला उठाया और एक जगह पर रख दीया।

पहेले के जमाने में यह सांबेला दो तरह के काम करते थे, एक तो रसोई घर की चीजो को ठीक करने के लीये और अगर कोई आक्रमण करे दे तो अपनी शुरक्षा के लीये। सांबेला सौर्य का प्रतीक माना जाता था। जेसींगभाई की बहनने सांबेला उठाया और गाँव के बहार पहुंच गये।

जैसे ही जेसींगभाई बहार से आये उन्होंने देखा और अपनी बहन को पूछा ''यह सब क्या है ऐसा रौद्र स्वरुप क्युं लिया है ?'' बहनने कहा की महाराज को पकडने के लिये पेश्वा की सेना आ रही है तब जेसींगभाईने कहा की कोई सेना नही आरही है वो काफी दूर से आ रहे हैं और रास्ते में कोई नहीं मिला है। दोनो भाई बहन घर वापस आये।

श्रीजी महाराज मुश्कुराते हुए बैठे है और कहते हैं, ''क्या सेना को पराजीत करके आये ?'' ''नहीं महाराज कोई सेना नहीं है।'' महाराज कहते हैं, ''नहीं आपका जय हुआ, सेना का पराजय हुआ। आप इतनी साहसीक थे की आप जीतकर आये हो।'' स्वामिनारायण भगवत वखतबा की शूरवीरता से बहुत प्रसन्न हुए।

प्रिय मित्रो ! सावधान रहना, कीसी भी समय हमारी भी एसी अनायास परीक्षा हो तब हींमत नहीं हारना। हमारे ब्रह्मानंद स्वामी कहते है की

"हरिजन साचा रे जे उरमें हिंमत राखे,
विपत्ते वच्ची रे केदी दीन वचन नव भाखे."

इसीलीये हमारे घर में और जीवन में भगवान को रखना हो तो शूरवीर बनना, अगर भक्त शूरवीर है तो भगवान उसकी अवश्य सहाय करते हैं।

"जो होय हिंमत रे नरने उरमांही भारी,
दृढता जोईने रे तेनी मदद करे मुरारी."

यह वार्ता आपने पढी ! शुरुआत में ही लीखा की बात भले ही छोटी हो लेकीन इसका रहस्य बहुत बड़ा है यह मत भुलना।

મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ - કલોલ (પંચવટી)ના દર્શન તા. ૨૧ થી ૨૭ નવેમ્બર ૨૦૧૭

મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ - કલોલ-(પંચવટી)ના દર્શન તા. ૨૧-થી ૨૭ નવેમ્બર ૨૦૧૭

મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ - કલોલ (પંચવટી)ના દર્શન તા. ૨૧ થી ૨૭ નવેમ્બર ૨૦૧૭

મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ - કલોલ (પંચવટી)ના દર્શન તા. ૨૧ થી ૨૭ નવેમ્બર ૨૦૧૭

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) अपने 'मन', 'ईन्द्रिय' और 'बुद्धि'में कामना भरी हुइ है जो हमे पतन की ओर ले जाती है
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी यह जानते है की हमारे द्वारा कभी भी कोई **'अधर्माचरण'** नही होना चाहिए । फिर भी वह हो जाता है । कभी कभी अनजाने से भी पाप कर्म हो जाता है । उदाहरण के तोर पर हमारे रोज के पाप कर्म तो जैसे हम रसोई बनाते हैं, झाडु लगाते हैं, साँस लेते हैं तो उससे भी हमसे पाप कर्म हो जाता है । तो एसे रोज के पाप कर्म से निवारण हेतु शास्त्र में पांच बाते बताई गयी है । हम रसोई घर में रसोई बनाते है तब हमे गाय माता के लीये पहली रोटी नीकाल लेनी चाहिए । (चींटीयो के लीये) दाना देना, मछलीयो के लीये आटे को गोटी बनाकर उसे देना, पंछीयो को चुगने के लीये दाना देना और रोटी के साथ घृत और सक्कर मीलाकर अग्नि में उसका होम अर्पण करना । यह सारे हमारे रोज होने वाले पाप कर्म का प्रायश्चित है । लेकीन कुछ बाते हमे पता है की इसे पाप कर्म कहते है और वह नही करना चाहिए । यह बात गलत है फिर भी हो जाती है । तो इसकी वजह है 'कामना' । क्योंकी हमारे मन, ईन्द्रिय और बुद्धी में कामना भरी पडी हुई है जो हमे पतन की ओर ले जाती है । यह हमारे अंदर भरी हुई कामना से ही हमारे मन में 'क्रोध' और 'लोभ' उत्पन्न होते हैं । किसी भी वस्तु को प्राप्त करनी की वासना, लोभ, हमे पाप की ओर ले जाते है और लालच और लोभ के कारण मनुष्य कुछ भी कर देता है और जब उसकी कामना पुरी नहीं होती तो उसके मनमें क्रोधआ जाता है । मनुष्य के मन में ईर्ष्या का भाव भी जन्म लेता है जब वह यह सोचता है की जो चीज दूसरो के पास है वह चीज मेरे पास क्युं नहीं है ? इस तरह जो 'आसक्ति' है वो हमे कर्मबंधन में डाल देती है । इसके निवारण के लीये हम जो भी कर्म करे वो निष्काम कर्म करे और परोपरकार के लीये ही कार्य करे जो हमे मुक्तिकी ओर ले जाता है और सुखी जीवन की ओर ले जाता है । हमे हमारे सत्कर्म करते रहना हैं और कभी भी दूसरो के जीवन के साथ अपने जीवन की तुलना नही करनी है । किसीने कोई गलत कार्य किया है तो वह जाने और भगवान हमे दूसरे के दोष दीखे बीना अपने सत्कर्म करते रहना है क्योंति भगवान सब कुछ देखता है ।

महाभारत के युद्ध के बाद भगवान श्रीकृष्ण को रुक्ष्मणीजी ने पूछा, ''हे प्रभु भिष्मपितामह और द्रोणाचार्यने अपना पुरा जीवन धर्मपारायण रुप से बिताया तो भी एसा क्युं हुआ ?'' श्रीकृष्ण भगवानने उत्तर दिया की, ''जब द्रौपदी का वस्त्राहरण हो रहा था तभी यह दोनो वरिष्ठ होने के बावजुद भी मौन रहे, अर्थात् मौन रहकर पाप कर्म में सहयोग दीया ।'' तो हमे अगर यह पता है कि यह गलत है तो हमे कुछ कहना चाहिए । अगर हम मौन रहते तो भी हम इस पाप के सहयोगी बनते हैं । और एकबार की गयी इस गलती की वजह से उन्होंने कीये हुये सारे सत्कर्म नष्ट हो गये । रुक्ष्मणीजीने पूछा, ''कर्ण का क्या दोष था ? कर्ण तो बडा दानवीर था ।'' भगवानन उत्तर दीया, ''युद्ध में जब अभिमन्यु धायल हुआ तब उसने कर्ण के पास पानी मांगा । कर्ण जहा खडे थे वहाँ एक खडे में पानी था । पानी नजदीक होते हुए भी कर्ण ने उसको पानी नही दीया । तो कोई भी व्यक्ति क्यों न हमारे दुश्मन हो फिर भी अगर वह सचमुच में कीसी आपत्ति में हो तो हमें उसकी सहायता करनी चाहीये । उस समय पर हमे अपना कर्म करना चाहिए । तो इस गलती की वजह से जिस में दानवीरता थी और जो पूण्य कर्म कीया था वह नष्ट हो गया और उसी खडे में कर्ण के रथ का पहीया फस गया और उसका नाश हुआ ।'' तो सभी व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करना चाहिए । अगर हम मनुष्य होकर भी अपने धर्म का पालन नही करेंगे तो वह पाप हो जाता है ।

विषयो का संग करने से संन्यासी का पतन हो जाता है । जो संन्यासी है वह परमात्मा के करीब होता है लेकिन अगर वह विषयो में आसक्त हो जाता है तो उस संन्यासी का पतन हो जाता है । राजा का पतन कीसीकी गलत सलाह मानने से होता है । जो राजा है वह अपने आसपास के लोगो की सलाह सुने वह ठीक है लेकीन कभीभी कोई भी गलत सलाह को नही माननी चाहिए । उसको दी गई प्रत्येक सलाह पर विचार और मनन करने के बाद अगर उसे उसका कार्यान्वित करने योग्य लगे तो ही उसका कार्यान्वय करना चाहिए ।

ज्ञानी के ज्ञान का पतन भी अहंकार से होता है । ज्ञानी लोगो को यह भय रहता है की, ''अगर में मेरा ज्ञान दूसरो को दूंगा तो वह मुझसे ज्यादा ज्ञानी हो जायेगा ।'' लेकिन ज्ञान बांटने से बढता है वर्ना वह संकुचीत हो जाता है । ज्ञान को दुसरो के साथ बाटना चाहीए । अगर मन में अहंकार रखेंगे तो ज्ञान का नाश हो जाता है । इसीलीये प्रत्येक व्यक्ति को इस बात को ध्यान में रखकर अपने धर्म का पालन करना चाहीए और अगर कभी अन्जाने में अधर्माचरण हो जाता है तो उसका सबसे आसान रास्ता है वो अपने सच्चे मन से पश्चाताप करके सब कुछ कह देना और भगवान के पास बैठकर सच्चे दिल से माफी मांगनी है । हमे यह आदत डालनी है कि हमसे कोई भी गलत कार्य न हो और हमसे एसा कोई भी कार्य कभीभी न हो जिससे दूसरो की आंख में आंसु आ जाये । हमें एसा जीवन जीना है की हमारे जाने के बाद भी कीसी की आंख में हमारे लीये आंसु आ जाये और वह हमे याद करे ।

उत्तरायण के पुण्य (झोली) पर्व

नाम : .....

पता : .....

फोन नं. : .....मो. : .....

उत्तरायण पुण्य पर्व

पपू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने ४५ वें जन्मोत्सव के अवसर पर 'आंगन' की स्थापना की उदघोषणा की। इसीलीए अब नरनारायणदेव देश के सभी शहर और गाँवो के कोठारीश्री और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रतिनिधीयो से यह विशेष नीवेदन है की अपने गाँव में उत्तरायण पर्व झोली निमित्त जो कुछ भी अन्न, रोकड में और जीवन जरुरी अन्य चीजें जो दान में मिले उन सभी चिज वस्तुओ को अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में 'आंगन' की कचेरी में भेज कर उसकी स्वीकृति भी लेले। यह सारी चीजो का दान बहुत सारे जरुरीयात मंद लोगो तक पहोंचाया जायेगा। यह संकल्प हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री का है। इसीलीये यह 'आंगन' सेवा प्रवृति प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की निगरानी में हमारे सत्संगी महिला भक्तो के द्वारा होगी।

विगत	मूल्य	वजन	प्रति ५ कि. का मूल्य	आपकी सेवा (रु. में)
चावल	३०५०	१०० की.	१५५	
गेहू	१५००	१०० की.	७५	
मग	८०००	१०० की.	४००	
तल	२४००	२० की.	६००	
चनादाल	२४००	१०० की.	६००	
तुवेरदाल	१००००	१०० की.	५००	
मोगरदाल	७०००	१०० की.	३५०	
शुध्धघी	५०००	१ डीबा	१६७५	
तेल	११७०	१ डीबा	३९०	
गुड	५०००	१०० की.	२५०	
चीनी	४१००	१०० की.	२०५	
कुल	४९६२०		५२००	

यह दान आप वस्तु या रोकड के रुप में अन्यथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के नाम से चेक या ड्राफ्ट के रुप में भी दे सकते हैं।
स्थान : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद,
दूरभाष : ०७९-२२१३२१७०

महंत स्वामी
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के
श्रीहरि स्मृति सहित जयश्री स्वामिनारायण

देवस्य के लीये आई.एस.एस.ओ. ने ५०० एकड जमीन खरीदी

आज के युग में दैनंदिन जीवन से त्रस्त लोग एक एसी जगह की शोधमें होते है जहाँ उसको कुछ नया मिले लेकिन उसके साथ साथ मन की शांति भी मिले । कही सालो तक मानव कल्याण और सत्संग उत्कर्ष के लीये अथाग परिश्रम जीन्होने कीया एसे संप्रदाय की श्री नरनारायणदेव की गादी के पाँच वे आचार्य प.पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को समर्पित और प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और आई.एस.एस.ओ. का महात्वाकांक्षी प्रोजेक्ट एसा देवस्य अबाल वृद्ध सब के लीये मन, शरीर और आत्मा को फीर से उत्साहीत करने वाला एक स्थान बना रहेगा । अमेरिका के वर्जीनीया स्टेट में ५०० एकड से ज्यादा जमीन पर बनने वाले इस संकुल की आज की पीढी को और सत्संगी या चुस्त सत्संगी नही है एसे परिवार को आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजीक मूल्य एक ही स्थान पर समज में आ जाये एसी व्यवस्था खडी की जायेगी । रिचमन्ड, वर्जीनीया जहाँ पर बसे हुये हिन्दु परिवार अपने ज्यादातर उत्सव जहाँ पर मनाते है उस स्थान से केवल पचीस मीनीट तक ड्राईव करके पहोंचा जा सकता है एसे इस स्थान में कोई भी प्रवेश मूल्य नहीं रखा जायेगा लेकिन वहाँ पर मिलने वाली सेवाओ पर तय कीया हुआ मुल्य चुकाना पडेगा । इस प्रोजेक्ट का खर्च बहुत बडा होने के बावजुद संप्रदाय के अन्य प्रोजेक्ट की तरह देश-विदेश के छोटे से छोटे हरिभक्त से दान लेकर उनको भी सहयोगी बनाया जायेगा । आई.एस.एस.ओ. के द्वारा प्रतिवर्ष गर्मीयो की मौसम में युवाओ के लीये समर केम्प आयोजीत कीया जाता है जो अब यहीं पर आयोजीत कीया जायेगा ।

इस संकुल में आधुनिक एवम परंपरागत सुविधाएँ उपबल्धरहेगी जीस में आधुनिक जीम, स्पा और गौशाला एवम् घुडसवारी के लीये घुडशाल भी रहेगे । दूर के स्थान से आने वाले और कुछ दिन रहने के इच्छुक लोगो के लिये ३० या ४० आधुनिक सुविधाओ से संपन्न निवास कक्ष बनाये जायेगें । ५००० से ६००० स्कवेर फूट में बनने वाले मंदिर में श्री राधीकाजी और श्रीकृष्ण की मूर्ति प्रतिष्ठित की जायेगी । यह वह मूर्ति होगी जो श्री नरनारायणदेव देश अंतर्गत पाकिस्तान के करांची मंदिर से भारत के विभाजन के समय लायी

BUSINESS/MAGAZINE
INDIA WEST

Section B · December 1, 2017

ISSO Acquires 500 Acres of Pristine Property To Build 'Devasya', Its First Retreat in the U.S.

By REENA RATHORE
India-West Staff Reporter

WHISKING yourself away from the daily grind to a getaway that not only has the amenities to guide you into a state of relaxation and re-energize your mind, body, and spirit, but a place that could also offer a little something for everyone, from young children to senior citizens, is a dream most of us have every now and then.

"Devasya," a 500-plus acre serene retreat located in Virginia, which seeks to bring generations of families together to enjoy a wide variety of spiritual, cultural and social experiences, could be that perfect spot.

An ambitious project initiated by the International Swaminarayan Satsang Organization, more commonly known as ISSO, Devasya, which is expected to open in the summer of 2019, is designed to spur health and personal transformation

By offering all the modern facilities and amenities to satsangis/followers and other visitors, including serene lodges, 'saatvik' or vegetarian food, several leisure and recreational activities — intended to attract families — as well as health, fitness and wellness services, the center aims to engage people from all backgrounds.

Indian American Dev Keray, who is the president of the Los Angeles ISSO Temple — which is one among 20 in the U.S. — and the treasurer of the U.S.-based ISSO temples, told India-West that the idea of this retreat germinated a few years ago.

"Our organization has yearly summer camps for our youth and it's usually held at different locations every year," Keray said. "We thought it would be nice to have a facility for our youth where they can come ... place that they can call it their ... as opposed to renting facilities ... every year."

... apart from year-round pleasant weather in Virginia, the organization zeroed in on this location since most of their congregations

(Cont. on page B4)

The International Swaminarayan Satsang Organization, more commonly known as ISSO, is developing a 500-plus acre property in Virginia, called Devasya. Seen here is an architect's rendering of the ... shrine on the property, which will house idols of Shree Radhikaji and Shree Hari Krishna Maharaj. Dev Keray, Indian American president of the Los Angeles ISSO Temple, told India-West that the idea of this retreat germinated a few years ago. (photo provided)

Devasya, according to ISSO, is dedicated to His Holiness Devendraprasadji Maharaj (the fifth Mahantshri of Shree Nar Narayan Dev Gadi), who tirelessly dedicated his life and years to satsang for the benefit of humanity. (photos provided)

B4 – December 1, 2017

Business/Finance

INDIA-WEST – December 1, 2017 – B5

ISSO Acquires 500 Acres To Build 'Devasya', Its First Retreat in U.S.

A closer look at the temple's architecture.

An aerial shot of Devasya.

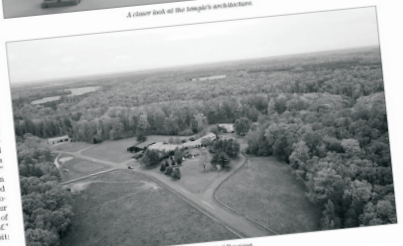

गयी थी और अभी उसको राजस्थान में माउन्ट आबु के नजदीक खान गाँव में प्रतिष्ठित की गयी है, इसके अलावा श्री गणपतिजी, श्री हनुमानजी, शिव पार्वती इत्यादि मूर्ति भी प्रतिष्ठित की जायेगी । जिससे सभी को लाभ मिल शके । मंदिर में प्रतिदिन प्रार्थना आरती तो होगी ही उसके साथ साथ कीसीना कीसी अवसर पर अभिषेक और अन्नकूट भी आयोजीत किये जायेगे । संकुल के भीतर करीब एक कि.मी. के व्यास जीतना बड़ा सुंदर तालाब है और एक छोटा गोल्फ कोर्स भी है । इसके अलावा बच्चो के लिये खेल-कूद के साधन भी रखे जायेगें । इस संकुल में स्थित वेजीटेरीयन रेस्टोरन्ट में शुध्धऔर सात्वीक भारतीय और विदेशी व्यंजन और केटरींग सेवा भी दीये जायेगें । मंदिर और वातावरण की वजह से मन और आत्मा की तंदुरस्ती के साथ साथ तन की तंदुरस्ती के लीये जीम, स्पा, नेचरोपेथी और आयुर्वेदीक सेन्टर भी रखे जायेंगे । यह संकुल करीब २०१९ की गर्मीयो की मौसम में शुरु कीया जायेगा एसा आई.एस.एस.ओ., यु.एस.ए. के ट्रेझरर श्री देवराजभाई केराईने बताया ।

(ईन्डिया वेस्ट, बिझनेस मेगेजीन की १ दिसम्बर, २०१७ की आवृत्ति में से साभार)

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रयागराज का द्वितीय पाटोत्सव

सर्वोपरी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से और उनके ही स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी शुभ आज्ञासे एवं प.पू. मोटा महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद और प्रयागराज मंदिर के पूज्य महंत स्वामी नारायणस्वरुपदाजी की प्रेरणा से त्रिवेणी संगम और संप्रदाय की महान तीर्थभूमि प्रयागराज श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्शन दे रहे परब्रह्म परात्पर सर्वोपरी श्री बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का द्वितीय पाटोत्सव दि. ६-११-१७ से ८-११-१७ तक बडी धामधूम से संपन्न हुआ। इस पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. हरिशभाई जयंतीभाई पटेल (श्री सहजानंद परिवार जयपुर) थे।

इस अवसर पर स.गु. निष्कुलानंद काव्य अंतर्गत श्रीमद् स्नेहगीता की संगीतमय त्रीदिनात्मक कथा का भी सुंदर आयोजन हुआ था जिस के वक्ता साधु रामानुजदासजी और शास्त्री स्वामी हरिगुणदासजी थे । कथा के दौरान पोथीयात्रा, जलयात्रा, सामुहीक त्रीवेणी पुजन, सामुहीक गंगा स्नान, सामुहीक महापूजा, निज मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज का पुष्पाभिषेक और पंचामृत एवम् केशर जल का अभिषेक, छप्पनभोगन अन्नकूट और रात्री का सास्कृतिक कार्यक्रम भी बहुत सुंदर तरीके से संपन्न हुआ।

मंदिर के द्वारा इस सुंदर आयोजन से त्रिवेणी तीर्थ संगम में सभी त्यागी-गृही इत्यादिक हरिभक्तोने सामुहिक स्नान कीया था। हरिभक्तो और महिला भक्त के द्वारा संप्रदाय की मर्यादामें रहकर रासोत्सव के साथ धुन कीर्तन भी कीये गये थे।

इस अवसर पर अहमदाबाद, कच्छ-भुज, मूली, वडताल, जुनागढ, अयोध्या, उमरेठ इत्याधिधाम से संत भी पधारे थे। और प्रसंग के अनुरुप उचित उद्बोधन भी कीया था। कोठारी पार्षद श्री कमलेश भगत इत्यादी महंत स्वामी के मंडल के संत पार्षद मंडलने देश-विदेश से पधारे हरिभक्तो के लीये रहने की सुंदर व्यवस्था की थी। (साधु रामानुजदास, गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोविंदपुरा वेडा में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से और श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे और स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी गुरु स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (कांकरीया) और स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सिध्धेश्वरदासजी (ईडर) की अलौकिक प्रेरणा से और शास्त्री स्वामी माधवप्रियदासजी के मार्गदर्शन से गोविंदपुरा वेडा में नूतन भव्य हरि मंदिर का निर्माण पूर्ण हो जाने के बाद दि. १८-११-१७ से २०-११-१७ पर्यंत मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर त्रिदिनात्मक श्रीमद् भक्तचिंतामणी पारायण, महाविष्णुयाग, ५१ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून इत्यादि कार्यक्रम बड़ी धामधूम से संपन्न हुये । श्रीमद् भक्तचिंतामणी ग्रंथ का संगीत मय रसपान शास्त्री स्वामी माधवप्रियदासजीने करवाया था। इस अवसर पर अनेक स्थान से पधारे हुये संतोने प्रसंग के अनुरुप उद्बोधन किया था।

दि. २०-११-१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और उनके वरद् हस्त से नूतन मंदिर में ठाकोरजी की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्तविधिसे की गई और उसके बाद सभा में प.पू.ध.धु. महाराजश्री के वरद् हस्त से छोटे-बड़े यजमान हरिभक्तो का सन्मान किया गया था। इस दिव्य अवसर का लाभ गाँव के सभी भक्तजन और नजदीकी सभी गाँव के हरिभक्तोने उठाया था। इस पूरे कार्यक्रम के दौरान सभा का संचालन पूजारी शास्त्री स्वामी कुंजविहारी स्वामीने किया था। (कोठारी राजुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालिगाँव का सप्तम पाटोत्सव

सर्वोपरी श्रीहरि की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी शुभ आज्ञासे और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट-गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर काली गाँव का सप्तम पाटोत्सव बड़ी धामधूम से मनाया गया। अ.नि. मफतभाई ईश्वरभाई पटेल, गं.स्व. कमलाबेन मफतभाई पटेल के संकल्प से उनके पुत्र श्री चिनुभाई, श्री अनिलभाई और श्री नितेशकुमार (अमेरिका) इस पाटोत्सव के यजमान रहे थे। इस अवसर पर स.गु. पू. शास्त्री पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) और कालुपुर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी इत्यादि संत मंडल के द्वारा ठाकोरजी को अभिषेक, अन्नकूट आरती इत्यादि हुये थे। उसके बाद आयोजीत सुंदर सभा में संतोने भगवान श्रीहरि का माहात्म्य और यजमान परिवार का सन्मान किया था। और अंत में सभी हरिभक्तोने प्रसाद लीया था। (कोठारीश्री कालीगाँव)

प्रसादि के गवाडा गाँव में श्रीमद् धीरजाख्यान त्रिदिनात्मक पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और गांधीनगर और नारणघाट मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री

स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से श्रीहरि के अलौकीक प्रसादी के गाँव गवाडा में दि. २४-११-१७ से २६-११-१७ तक त्रिदिनात्मक श्रीमद् धीरजाख्यान कथा संगीत की मधुर सुरावली के साथ संपन्न हुई । जिस के वक्ता संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार स.गु. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) थे । अ.नि.प.भ. घेलाभाई नरसिभाई पटेल और अ.नि. काशीबेन घेलाभाई पटेल परिवार इस पारायण के यजमान थे ।

दि. २६-११-१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और मंदिर में ठाकोरजी की आरती उतारकर सभा में बिराजमान हुये थे । जिस में यजमान परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री के पूजन-अर्चन, आरती इत्यादि के साथ आशिर्वाद प्राप्त किए थे ।

इस अवसर पर विभिन्नस्थान से पधारे हुये संतो में स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, ब्रह्मचारी स्वामी पूजारी राजेश्वरानंदजी, मूली के महंत स्वामी, सुरेन्द्रनगर से कृष्णवल्लभ स्वामी, स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), महंत स्वामी (एप्रोच) और ईडर, प्रांतिज, कांकरिया, कालुपुर, महादेवनगर और नारायणघाट मंदिर से भी संत पधारे थे । अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वचन दिये थे । छोटे-बड़े बहुत सारे हरिभक्तोने इस अवसर पर यजमान बनने का लाभ उठाया था । गाँव के सभी ग्रामजन और अतिथी ने आखरी दीन भोजन रुपी प्रसाद लीया था । रात्री को सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ था । (शास्त्री स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी और कानजीभाई घेलाभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) का १८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और गांधीनगर (से-२) के महंत पू. स.गु. शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से दि. २०-११-१७ से २२-११-१७ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) के १८ वे पाटोत्सव के अवसर पर श्रीहरि वनविचरण त्रिदिनात्मक (रात्रीय) संगीतमय पारायण का आयोजन किया गया था । जिस के वक्ता स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी थे । प.भ. हसमुखलाल चुनीलाल पटेल (फिंचोड-अभी गांधीनगर) अ.सौ. सरयुबेन हसमुखलाल पटेल इत्यादि परिवार इस पाटोत्सव के यजमान थे । इस अवसर पर पोथीयात्रा, ठाकोरजी का अभिषेक दर्शन, अन्नकूट दर्शन, धर्मकुल दर्शन आशीर्वाद और संतो की अमृतवाणी का लाभ सेंकडो हरिभक्तोने लीया था ।

सुबह ७-०० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से ठाकोरजी का अभिषेक वेदोक्तविधिसे हुआ था ।

इस अवसर पर अहमदाबाद के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी और वडनगर, मूली, कांकरीया, धोलका, टोरडा, एप्रोच, ईडर, सोकली, बावला, प्रांतिज, कालुपुर इत्यादि स्थान से संत पधारे थे ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद दिये थे । सभी हरिभक्तोने देव दर्शन, धर्मकुल दर्शन कथा श्रवण इत्यादी के साथ भोजन रुप प्रसाद लेकर धन्य हुये थे ।

(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में नूतन सिंहासन मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में नूतन सिंहासन मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव बड़े धामधूम से मनाया गया था ।

महामुक्त स.गु. श्री गुरुचरणरतनानंद स्वामी की जन्म भूमि और श्रीहरि के प्रसादी रुप धमाणसा गाँव का मंदिर १७५ साल पहले स.गु. श्री महानुभावानंद स्वामीने हवेली घाट का बनावाया था । उसके बाद ९० साल पहले स.गु. स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजीने बंगला घाट का मंदिर का जिर्णोद्धार करवाया था जो जिर्ण हो गया था । इसीलिये नूतन सिंहासन और नूतन मूर्तियो का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव दि. १५-११-१७ से १९-११-१७ तक मनाया गया । इस अवसर का मार्गदर्शक श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्रह्मचारी स.गु. स्वामी राजेश्वरानंदजी, सगु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट-गांधीनगर), स.गु. पू. भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी थे । इसके अलावा नारायणघाट के महंत श्री दिव्यप्रकाश स्वामी, गोपालजीवन स्वामी (प्रांतिज), बालस्वरुप स्वामी (मूली), धर्मेन्द्र महाराज (मूली) इत्यादि संतोने भी सुंदर सेवा की थी । इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण मूर्ति प्रतिष्ठा, यज्ञ, ठाकोरजी की नगर यात्रा, पोथीयात्रा, अभिषेक, अन्नकूट दर्शन, शाकोत्सव, घनश्याम जन्मोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि बड़े धामधूम से मनाये गये । स.गु. शा.स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) इस कथा के वक्ता थे । जिन्होने संगीतमय शैली में कथा का रसपान करवाया था ।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री और प.पू.अ.सौ. मोटा गादीवालाश्री भी पधारे थे । उत्सव में अनेक हरिभक्तोने यजमान बनकर सुंदर लाभ उठाया था । दि. १९-११-१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और उनेक वरद् हस्त से निज मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की आरती हुई थी । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देकर बहुत

प्रसन्न हुये थे । इस अवसर पर अनेक स्थान से बहुत सारे संत पधारे थे ।

संप्रदाय के मुर्धन्य विद्वान संत स.गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी के द्वारा भव्य शाकोत्सव भी संपन्न हुआ था । (कोठारीश्री और उर्मित पटेल)

लोदरा गाँव में कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे और स.गु. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट-गांधीनगर से-२ के महंतश्री) के प्रेरणा और मार्गदर्शन से और लोदरा गाँव के प.भ. डाह्याभाई हरगोवनभाई पटेल और कांताबेन डाह्याभाई पटेल के जीवन पर्व के अवसर पर दि. २१-१०-१७ से २२-१०-१७ तक श्री विदुरनीति शास्त्र त्रिदिनात्मक कथा संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद के साथ संगीतमय स्वरुप में संपन्न हुई ।

इस अवसर पर बहुत सारे धर्मप्रेमी लोगोने कथा का लाभ लीया था और धन्य हुये थे । हरिभक्तश्री दशरथभाई और योगेशनभाई और उनके परिवार में अपने माता-पिता का ऋण अदा करने के लीये इस पारायण का सुंदर आयोजन करके प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया था ।

(शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदास - नारायणघाट)

सिमेज (ता. धोलका) गाँव में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

धोलका धाम निवासी परमकृपुलु श्री मोरली मनोहर देव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से एवम् धोलका मंदिर के महंत स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से दि. १६-११-१७ से २२-११-१७ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह संपन्न हुई जिस के वक्ता संप्रदाय के सुप्रसिध्धविद्वान कथाकार स.गु. शा. स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) से । प.भ. दशरथभाई कुवेरभाई पटेल (सिमेज) इस पारायण के यजमान थे जिस का बहुत सारे हरिभक्तोने कथा श्रवण करके अपने जीवन को धन्य बनाया । समग्र कथा का आयोजन और उसका सफल संचालन धोलका मंदिर के कोठारी शा.स्वामी सत्यसंकल्पदासजीने किया था । दि. २२-११-१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और सबसे पहले श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकोरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे जहाँ पर यजमान परिवार ने पूजन अर्चन आरती इत्यादी के साथ आशीर्वाद प्राप्त किये थे । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने समग्र सभा को आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर अनेक स्थान से संत भी पधारे थे और सभा संचालन शा.स्वामी अजयप्रकाशदासजीने किया था । (सुरेशभाई पूजारा)

मोटेरा गाँव में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा के द्वारा प्रतिमास सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । दि. २९-१०-१७ के दिन रात्रीय को ९ से ११ के दौरान प.भ. घनश्यामभाई के द्वारा सभा आयोजीत की थी जिस में कोटेश्वर गुरुकुल के शा. राम स्वामी, गांधीनगर से पू. चैतन्य स्वामी और नारायणघाट से पू. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी इत्यादि संत मंडलने कथावार्ता, कीर्तन भक्ति इत्यादि का दिव्य लाभ सभी हरिभक्तो को दिया था ।

(शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी - नारायणघाट)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर का १२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् मंदिर के महंत स.गु. पू. स्वामीश्री प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मंदिर का १२ वाँ पाटोत्सव दि. ५-११-१७ और रविवार के शुभ दिन पर विधिवत रुप से मनाया गया इस अवसर पर दि. ३०-१०-१७ से ५-११-१७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण संपन्न हुइ जिनके वक्ता पूजारी स्वामी त्यागवल्लभदासजी थे । इसके अलावा त्रिदिवसीय श्रीहरियाग, अन्नकूट, महाभिषेक, तुलसीविवाह और रात्री को सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादी भी हुए थे । समग्र उत्सव के दौरान सभा संचालन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभ स्वामीने किया था जिसका लाभ नजदीकी गाँव के और स्थानीक भक्तोने लीया था ।

महिला हरिभक्तो को दर्शन और आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप मोटा गादीवालाश्री पधारे थे और अनेक स्थान से संत भी पधारे थे । प.भ. मोहनभाई लालजीभाई पटेल परिवार इस पाटोत्सव के यजमान थे । पाटोत्सव की विविधसेवामें अहमदाबाद से पू. राजेन्द्रप्रसाद स्वामी और मूली से भक्ति स्वामी, देव स्वामी और विश्वस्वरुप स्वामी एवम् श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडलने सुंदर सेवा की थी ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (ता. चुडा) का चतुर्थ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल का चतुर्थ पाटोत्सव दि. २७-१०-१७ कार्तिक सुद-७ के दिन मूली मंदिर के पू. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी और लीमडी मंदिर के महंत शा. ज्ञानवल्लभदासजी इत्यादि संतो की उपस्थिति में बड़े धामधूम से मनाया गया । संतो के द्वारा ठाकोरजी की अन्नकूट आरती, होमात्मक महापूजा इत्यादि गोर श्री जीतेन्द्रभाई के द्वारा संपन्न की गई । इस अवसर पर संतोने सर्वोपरि श्रीहरि और धर्मकुल माहात्म्य

और व्यसन मुक्ति के विषय पर उपदेशात्मक बाते भी की थी।

(नरेन्द्रभाई सोनी - कारोल)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (अमेरिका) दिपोत्सव कार्यक्रम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे और प.पू. मोटा महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से एवम् यहाँ के मंदिर के महंत शा. यज्ञप्रकाशदासजी और पूजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में दिपावली के कार्यक्रम के अंतर्गत श्री हनुमान चरित्र की कथा आयोजीत की गयी थी। जिस के वक्ता शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी थे। इस कार्यक्रम के यजमान अ.सौ. अस्मीताबेन परेशभाई कोवाडीया और अ.सौ. चिन्तुबेन संजयभाई थे।

नूतन वर्ष के सुमंगल प्रभात में आयोजित अलौकिक सभा में प्रमुख श्री जगदीशभाई पटेलने प.पू. मोटा महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के नूतन वर्ष के आशीर्वचन सबको पढकर सुनाये थे। दोनो संतोने भी नये वर्ष के अवसर पर प्रेरणात्मक उपदेश दीया था और प्रमुखश्रीने नये वर्ष की शुभकामनाये सबको दी थी और बाद में ठाकोरजी को भव्य अन्नकूट भी अर्पण कीया गया था।

मंदिर में सुंदर तुलसी विवाह का भी आयोजन किया गया था जिस में श्री अरविंदभाई और रंजनबेन चौधरी, श्री जैनिकभाई और प्रियाबहेन महेता, श्री जीतेन्द्रभाई और अर्चिताबेन पटेल और श्री बलदेवभाई और निताबेन पटेल परिवार यजमान थे। ठाकोरजी की पांच आरती और हाटडी का दर्शन का लाभ सभी हरिभक्तोने भाव विभोर होकर उठाया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और समग्र धर्मकुल की कृपा से यहाँ का सत्संग बहुत बढता जा रहा है। (वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से और श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और मंदिर के महंत स्वामी भक्तिनंदनदासजी और स्वामी निलकंठचरणदासजी की प्रेरणा से दिपावली के अवसर पर हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टनमें श्री हनुमानजी महाराज का पूजन-आरती, शारदा पूजन, गोवर्धन पूजन, नूतन वर्ष का अन्नकूट दर्शन और भव्य सत्संग सभा इत्यादि आयोजित हुये थे। विविधसेवा में हरिभक्तोने यजमान बनने का लाभ लिया था। संत ने सर्वोपरि श्रीहरि और धर्मवंशी का माहात्म्य समझाया था। अनेक भाविक भक्तोने सुंदर दर्शन कथा-वार्ता और अन्नकूट दर्शन का लाभ लिया था।

दि. ११ और १२ नवम्बर शनिवार रविवार के दौरान ईन्डियन सिनीयर सीटीझन एसोसीएशन ह्युस्टन टेकसास के द्वारा दूपहर के १२ से ३ के बीच कीर्तन भक्ति, सामूहीक प्रार्थना, धून, लकझरी बस के द्वारा हमारे मंदिरो के दर्शन, भोजन प्रसाद और सभी का सुंदर सन्मान कीया गया था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया (अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से और श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से हमारे कोलोनीया श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर में दिपावली के पर्व पर धनपूजन, चोपडा पूजन, लक्ष्मीपूजन, श्री हनुमानजी का पूजन आरती और नूतन वर्ष के पावन दीन पर निज मंदिर में ठाकोरजी के अन्नकूट दर्शन इत्यादि हुये थे। भूदेव श्री पिनाकीन जानी और श्री रोहीतभाईने समग्र उत्सव में पूजन विधिभी करवायी थी। यजमान हरिभक्त और आमंत्रित महानुभावो का सन्मान मंदिर की समिती के द्वारा सभा में भरत भगत के द्वारा कीया गया था। अंत में कथा वार्ता, धून, कीर्तन भक्ति और ठाकोरजी की अन्नकूट आरती इत्यादि धामधूम से संपन्न हुवे थे। जीस के दिव्य दर्शन का लाभ अनेक हरिभक्तोने उठाया था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी (छपैयाधाम) (अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से और श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी और शा. सी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी छपैयाधाम में दिपावली के पर्व पर लक्ष्मीपूजन, काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी का पूजन आरती, दिपावली का शारदा पूजन, चोपडा पूजन और नूतन वर्ष के पावन दीन पर ठाकोरजी के सन्मुख भव्य अन्नकूट और संतो के श्रीमुख से श्रीमद् भगवत कथा इत्यादि हुए थे।

दोनो संतोने दिपावली के विविधउत्सवो को सुंदर महत्व समझाया था और अनेक हरिभक्तोने यजमान बनकर लाभ लीया था। गोर श्री पीनाकीन जानी के द्वारा पूजन विधी संपन्न हुई थी। शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजीने अतिथि और यजमान परिवार का सुंदर सन्मान करके उनकी सेवा की सराहना की थी।

अनेक हरिभक्तोने देव दर्शन, कथावार्ता, अन्नकूट दर्शन और महाप्रसाद का लाभ लेकर धन्य हुए थे। (प्रविण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

જન્મસ્થાન ઉદ્‌ઘાટન મહોત્સવ - છપિયાધામના દર્શન તા. ૪ નવેમ્બર ૨૦૧૭

જન્મસ્થાન ઉદ્‌ઘાટન મહોત્સવ - છપિયાધામના દર્શન તા. ૪ નવેમ્બર ૨૦૧૭

जन्मस्थान उद्घाटन महोत्सव – छपैयाधाम का दर्शन दि. ४, नवम्बर २०१७

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) अल्हाबाद मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकोरजी का षोडशोपचार अभिषेक करते हुए संत और इस अवसर पर कथा पारायण करते हुए संत ।

(२) शिकागो मंदिर में तुलसी विवाह के दर्शन ।

(३) सिमेज गाँव में आयोजित कथा में व्यास पीठ की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।